उपलब्धियां

'मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक जीवन' का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित तथ्य प्राप्त हुए है जो उपलब्धियों के रूप में दर्ज हैं -

1. साठोत्तरी काल की महिला लेखिकाओं की कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण सहज एवं स्वाभाविक रूप में हुआ है।
2. अब पारिवारिक रिश्तें मुख्य रूप से 'अर्थ' पर ही अवलंबित दिखाई देते हैं। अर्थ की कमी रिश्तों में दरारें निर्माण करती है।
3. वर्तमान युग के संयुक्त परिवारों में स्नेह तथा अपनेपन की कमी दिखाई देती है। आज परिवार का हर सदस्य दूसरे को हीन दिखाने की कोशिश करता है।
4. वर्तमान युग में परिवारों में असफल दांपत्य जीवन की प्रचुरता दिखाई देती है। जिससे परिवार विघटन की स्थिति से गुजर रहे हैं।
5. आज पति-पत्नी दोनों शिक्षित होने के कारण दोनों में आपसी ईर्ष्याभाव दिखाई देता है।
6. आज नारी शिक्षित होकर सफलता के हर शिखर को पार कर चुकी है फिर भी उसमें अंधविश्वास और रूढ़िग्रस्तता के दर्शन होते हैं।
7. आज-कल लड़कियों की शादी उनकी डीग्रियां देखकर होती है ताकि ससुरालवालें शादी के बाद तुरंत उसे नौकरी पर लगा सके अर्थात उसे धन कमाने के साधन के रूप में देखतें हैं।
8. बढ़ती मंहगाई, बदलते जीवन मूल्य, स्वार्थ आदि के कारण रिश्तें-नातों की ऊर्जा 'अर्थ' केंद्रीत हो गई है। मां का पवित्र रिश्ता भी इस कुप्रभाव से बच नहीं सका है। स्वार्थी, सुखलोलुप मां अपनी बेटी को पैसे कमाने का मशीन मानकर उसकी कमाई खाती है, उसके भविष्य की उसको बिल्कुल चिंता नहीं है।

9. अपने बेटों की अच्छी परवरिश करनेवाले मां-बाप को बूढ़ापें में अपने बच्चों से अपमानीत होना पड़ता है और उनके त्याग को उनका स्वार्थ माना जाता है।

10. कुछ परिवारों में आज भी दांपत्य जीवन में सहचर्य और स्नेह दिखाई देता है लेकिन दिन-ब-दिन इसमें कमी आ रही है।

11. औद्योगीकरण तथा नागरीकरण के परिणाम स्वरूप संयुक्त परिवारों का तेजी से विघटन हो रहा है। इसके परिणाम स्वरूप एकल परिवार बढ़ रहे हैं।

12. समाज में हो रहें परिवर्तनों का परिणाम परिवार तथा विवाह संस्था को प्रभावित कर रहा है।

13. आज पारिवारिक जीवन विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है जो परिवर्तन की स्थिति से गुजर रहा है।

14. आधुनिक शिक्षित नारी खुद नौकरी करके परिवार का आधार स्तंभ बन गई है। वह परिवार तथा दफ्तर के दोहरे कार्यभाग को कुशलता एवं सुव्यवस्थित ढंग से निभा रही है उसके जीवन में नई-नई समस्याएं निर्माण हो रही है।

15. विधवाओं पर प्राचीन काल से अत्याचार होते दिखाई देते हैं। आज भी विधवाओं की स्थिति वैसी ही पाई जाती है सिर्फ उन्हें सताने के तरीके बदल गए हैं।

16. आज भी परिवारों में नारी-शोषण, अपमान, उत्पीड़न तथा पुरुष की असहयोग की भावना से नारी जीवन दुःख यातना का अध्याय बना हुआ है।

अनुसंधान की नई दिशाएं

कोई भी अनुसंधान का कार्य पूरी तरह से अंतिम रूप नहीं प्राप्त करता। जिस साहित्य को लेकर अनुसंधान किया जाता है, उसमें कुछ बातें ऐसी छूट जाती है जिस पर फिर से अनुसंधान किया जा सकता है। एम्. फिल. उपाधि की दृष्टि से मेरे अध्ययन की कुछ सीमाएं है। 'मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन' प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के अतिरिक्त मालती जोशी की कहानियों को लेकर भविष्य में कोई भी अनुसंधाता निम्नलिखित विषयों को लेकर अनुसंधान कर सकता है

1. मालती जोशी की कहानियों का शिल्प पक्ष।
2. मालती जोशी की कहानियों में चित्रित नारी।

3. मालती जोशी की कहानियों का तत्विक विवेचन।
4. मालती जोशी की कहानियों में चित्रित समाज जीवन।
5. मालती जोशी की कहानियों में दांपत्य जीवन का चित्रण।
6. मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक जीवन के बदलतें संदर्भ।
7. मालती जोशी की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण।

इस प्रकार मालती जोशी की कहानियों पर शोध कार्य हो सकते हैं। प्रत्येक विषय की अपनी एक सीमा होती है भविष्य में आनेवालें शोध-छात्र उपर्युक्त विषयों को लेकर शोध कार्य कर सकते हैं या अपनी नई दृष्टि से व्याख्या कर सकते हैं।

✷ परिशिष्ट

✷ संदर्भ ग्रंथ सूची

अ. आधार ग्रंथ

आ. समीक्षा ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएं

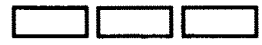

परिशिष्ट

Malti Joshi

ॐ

'Snehbandh'
50, Deepak Society, Chuna Bhatti,
Kolar Road, Bhopal–462 016.
Phone : (0755) 461638.

दि. २५ ऑगस्ट २००३

सप्रेम नमस्कार,

तुमचं पत्र Redirect होऊन मिळालं त्यामुळे थोडा उशीर लागणं शक्य आहे.

तुम्ही माझ्या कथांवर M.Phil करत आहात हे वाचून आनंद झाला. मागे याच युनिवर्सिटीतून महादेवी गुरव ह्यांनी माझ्या साहित्यावर M.Phil केलं आहे. त्यांचा थीसिस लायब्ररीत असल्यास बघावा. बरीच मदत होईल. माझ्या साहित्यावर पहिला शोधप्रबंध सासवड येथील सुभाष तळेकरांनी लिहीला, तो प्रकाशित पण झाला आहे, त्याचा पत्ता मी पत्राच्या शेवटी देत आहे. पुस्तकांची यादी, जीवन-वृत्त वगैरे Research वाल्यांसाठी print करून ठेवलं आहे. ते पण पाठवीत आहे. मला वाटतं तेवढ्याने तुमचं काम भागेल. अधिक काही हवे असल्यास पुन्हा पत्र लिहावे. नव्या पत्त्याची नोंद घ्यावी

कळावे

सधन्यवाद
मालती जोशी

पुस्तक : मालती जोशी का साहित्य

प्रकाशकाचा पत्ता :
अतुल प्रकाशन
C/o श्री रमेन्द्र तिवारी
107/295 ब्रह्म नगर
कानपुर (208012

ता.क. — परिचय, पुस्तकाची यादी वगैरे वेगळ्या लिफाफ्यात पाठवत आहे मिळाल्यावर कळवावे

1) मैं मध्यमवर्गीय महाराष्ट्रीयन परिवार में, पली बढ़ी और ब्याही गई। पिता जज थे। छोटे छोटे गांवों में स्थानांतर होता रहता था। इसलिये पढ़ाई भी बेतरतीब रही। ७ भाई बहन थे इसलिये खुशहाल थे पर ऐसा नहीं था। उन दिनों जीवन बहुत सामान्य था, आवश्यकताएं थोड़ी थी इसलिये बिना किसी frustration के बचपन गुजर गया।

2) घर में लिखने पढ़ने का वातावरण था। पिता कभी कभी लिखते थे पर ज्यादा छप नहीं पाया मैंने शायद उसी विरासत को सहेजा है।

3) यह जरूरी तो नहीं कि हर शिक्षित महिला नौकरी करे। मेरा तो आज भी मत है कि अगर बहुत जरूरी न हो तो महिलाओं को नौकरी नहीं करनी चाहिये। घर और बच्चे neglect होते हैं। जिनके घर में सास या मां होती है उनका ठीक है पर ऐसे घर कितने होते हैं।
मैंने शादी से पहले साल भर स्कूल में पढ़ाया था। शादी के बाद इंजीनियर पति के साथ गांधीसागर बांध पर चली गई। अत्यन्त छोटा स्थान मेरे पास थी। बाद में मेरे अपने भी बच्चे हुए। नौकरी करने का फिर मूड नहीं हुआ।

4) मुझे संगीत बहुत प्रिय है। गाती भी हूं। शादी से पहले कविसम्मेलनों में धूम मचाती थी। बुनाई में भी रुचि थी पर अब छोड़ दिया है। रचना बनाने का और खिलाने का बेहद शौक है।

5) पति की प्रेरणा या साथ न होता तो शायद मेरी प्रतिभा का दम ही घुट जाता। उन्होंने तो हमेशा प्रोत्साहित किया — हताशा के क्षणों में धीरज दिया। उन्हें कभी Ego की समस्या नहीं हुई। ६२ वर्ष का सुखी दाम्पत्य मैंने जिया है। दुर्भाग्य से दो वर्ष पहले वे नहीं रहे।

मालती जोशी

संदर्भ ग्रंथ सूची

✷ आधार ग्रंथ

✷ कहानी - संग्रह

1. मोरी रंग दी चुनरियां - विकास पेपर बैक्स, दिल्ली, प्रथम - 1984
2. एक सार्थक दिन - साक्षी प्रकाशन, दिल्ली प्रथम - 1995
3. अंतिम संक्षेप - विकास पेपर बैक्स, दिल्ली, प्रथम - 1996
4. आखिरी शर्त - राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम - 1997
5. बोल री कठपुतली - किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम - 1998

✷ समीक्षा ग्रंथ

6. अश्क उपेंद्रनाथ - हिंदी कहानी : एक अंतरंग परिचय
   नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम - 1967
7. त्रिपाठी (डॉ.) शंभुरत्न, शर्मा (डॉ.) कैलाशनाथ - पारिवारिक समाजशास्त्र
   किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम - 1956
8. जैन महेंद्रकुमार - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण
   जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली, लंदन - 1974
9. टंडन प्रतापनारायण - हिंदी कहानी कला
   हिंदी समिती सूचना विभाग, लखनऊ (उ.प्र.), प्रथम - 1970
10. दुआ सरला - आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी
11. बागडी आशा - प्रेमचंद परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन
    शोध प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम - 1974
12. मजुमदार (डॉ.) डी. डी. - कल्चर ऑफ इंडिया
    नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम - 1971
13. मुकर्जी रविंद्रनाथ - सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा
    सरस्वती सदन, मसूरी, प्रथम - 1962

14. यादव (डॉ.) उषा - हिंदी उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम - 1999
15. वेदालंकार हरिदत्त - हिंदू परिवार मीमांसा
सरस्वती सदन, मसूरी, प्रथम - 1963
16. वर्मा शीलप्रभा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलतें सामाजिक संदर्भ
विद्या विहार, कानपुर, प्रथम - 1987
17. वेंकटेश्वरराव (डॉ.) सीलम - यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन
18. सिंह सुरेश - हिंदी कहानी उद्भव और विकास
अशोक, नई दिल्ली, प्रथम - 1967
19. सिंह पुष्पला - समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ
नेशनल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम - 1986
20. सूरी (डॉ.) योगेश - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं
चंद्रलेखा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम - 1994

✷ कोश

21. (सं.) चातक गोविंद - आधुनिक हिंदी शब्द कोश
तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
22. (सं.) बाहरी (डॉ.) हरिदेव - राजपाल हिंदी शब्द कोश
राजपाल एंड संस, नई दिल्ली
23. (सं.) बोथ लिका - बृहदाख्यकोपनिषद, (अनु.) लिप झिंग
निर्णय सागर संस्करण, बंबई, प्रथम - 1937
24. (सं.) रावत हरिकृष्ण - समाजशास्त्र विश्व कोश
रावत पब्लिकेशनस्, जयपुर, प्रथम - 1998
25. (सं.) वर्मा रामचंद्र - मानक हिंदी कोश
हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयास, प्रथम - 1964
26. (सं.) वर्मा रामचंद्र - प्रामाणिक हिंदी कोश
हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस
27. (सं.) वर्मा धीरेंद्र - हिंदी साहित्य कोश भाग - 1

ज्ञानमंड़ल लि., वाराणसी, संवत् - 2020

28. (सं.) शामसुंदर दास (डॉ.) बी.ए. - हिंदी शब्द सागर
काशी नागरी प्रचारनी सभा, वाराणसी

29. (सं.) शुक्ल रमाशंकर - भाषा शब्द कोश
रामनारायणलाल बेनी प्रसाद प्रकाशन, इलाहाबाद

✷ पत्र-पत्रिकाएं

30. स्मारिका - 1995

31. (सं.) महीप सिंह - संचेतना - सितंबर-दिसंबर, 1996